स्त्री विमर्श के परिप्रेक्ष्य में मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों का अध्ययन

हिन्दी के महिला लेखन के क्षेत्र में मैत्रेयी पुष्पा अग्रिम स्थान का अधिकारी है। कहानी, कविता, उपन्यास, निबन्ध के क्षेत्र में मैत्रेयी पुष्पा ने अपनी एक अलग पहचान बनाई है। वह आंचलिक, ग्रामीण, शहरी परिवेश की लेखिका के रूप में उभर कर सामने आयी है। हिन्दी कथा साहित्य जगत में मैत्रेयी पुष्पा का आगमन एक घटना की तरह हुआ है। मैत्रेयी पुष्पा ने अपनी संवेदनाओं और निजी अनुभवों द्वारा सामाजिक विसंगतियों को भी महसूस किया। यह उनकी सृजनात्मक कृतियों के रूप में प्रदर्शित हुआ। मैत्रेयी पुष्पा का जन्म ३० नवंबर १९४४ को अलीगढ़ जिले के सिकुरी गाँव के एक ब्राह्मण परिवार में हुआ था। इनका आरम्भिक जीवन झांसी ज़िले के खिल्ली गाँव में बीता। मैत्रेयी पुष्पा ने अपने जीवन के आरम्भिक बीस वर्ष गाँव में ही बिताये है। इसी कारण उन्होंने गाँव की स्थिति एवं संघर्षों को भली भांति समझ पाई है। मैत्रेयी का बचपन बुदेलखंड के ग्रामीण परिवेश में था। यह वातावरण उनके मन को हमेशा मोहित करता था। युवावस्था में वे आंसी शहर में आयी थी। यहाँ आकर कॉलेज के शहरी वातावरण में उनको कई परेशानियों का सामना करना पडा। माँ के प्रभाव मैत्रेयी पर गहरा असर डाला। बुंदेलखड का ग्रामीण परिवेश से प्रेरणा पाकर मैत्रेयी जी ने साहित्य के विभिन्न क्षेत्रों में अपनी लेखनी चलाई। वर्तमान में मैत्रेयीजी नोएडा में रहती है और स्वतंत्र रूप से साहित्य सेवा में संलग्न है। मैत्रेयी का लेखन स्त्री-विमर्श को एक नई पहचान और आयाम देने में सफल भूमिका निभा रही है। किसी भी रचनाकर पर उसके आस-पास के परिवेश, धर्म जाति समाज और पारिवारिक सबन्धों का प्रभाव पडता है।

वे अपनी रचनाओं में इसी का चित्रण संवेदन संपृक्त होकर करते भी है। इस रचनात्मक यथार्थ के रचना संसार में पुरुष वर्ग ही प्रभावी रहा है। परन्तु पिछले तीन दशकों से महिला लेखन अपनी पहचान बनाता हुआ बहुलता के साथ सामने आया है। मैत्रेयी पुष्पा का नाम विगत दशकों में महिला रचनाकारों की सूची में अहम स्थान अलंकृत करनेवाला है।

प्रस्तुत शोध द्वारा मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों के माध्यम से आज की नारी के बदलते स्वरूप का आकलन करने का प्रयास किया गया है। शोध विषय पाँच अध्यायों में विभाजित है। **पहला अध्याय है हिन्दी के साठोत्तर महिला उपन्यासकार**। इसमें समकालीन साहित्य की मुख्य प्रवृत्तियों का अध्ययन- प्रमुखतः भूमंडलीकरण एवं बाज़ारीकरण, सांप्रदायिकता, राजनीति, इतिहास और मिथक, आँचलिकता, सामाजिक रिश्ते नाते का स्वरूप, दलित जीवन, फेमिनिज़म आदि मुख्य है। महिला साठोत्तरी लेखिकाओं की रचनाओं में पायी जानेवाली राजनीतिक चेतना, धार्मिक चेतना, पारिवारिक नीति, सामाजिक-आर्थिक नीति, मनोवैज्ञानिक चेतना, महिला लेखन में वर्णित प्रेम भावना आदि का अध्ययन किया है। साथ ही हिन्दी के प्रमुख साठोत्तरी महिला उपन्यासकार और मैत्रेयी पुष्पा व्यक्तित्व, कृतित्व आदि पर सम्यक विचार प्रकट किया गया है।

दूसरा अध्याय है-मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों का आलोचनात्मक अध्ययन। इसमें मैत्रेयी पुष्पा जी के उपन्यासों का अध्ययन किया है। उनके सभी उपन्यासों में चित्रित नारी संबन्धित समस्याओं का अध्ययन किया है। उपन्यासों की प्रमुख प्रवृत्तियाँ जैसे सामाजिक- पारिवारिक संबन्ध, राजनीतिक स्थितियाँ, उनके उपन्यासों में वर्णित प्राचीन कुरीतियाँ, ग्राम्य जीवन, विभिन्न

जातियाँ और संस्कृति, दलित जीवन, उनके उपन्यासों के शिल्प पक्ष, पात्र परिकल्पना, भाषा शैली आदि का विस्तृत परिचय दिया गया है। मैत्रेयी पुष्पा ने जीवन की निर्भीकता की नीव पर साहित्यिक महल का निर्माण किया जिसके फलस्वरूप साठोत्तरी महिला उपन्यासकारों में एक अलग व्यक्तित्व का अधिकारी बन गयी।

तीसरा अध्याय है- मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में स्त्री विमर्श। इसमें स्त्री की मानसिकता, समकालीन संदर्भ और स्त्री विमर्श, पश्चिम का स्त्री मुक्ति आन्दोलन, स्त्री मुक्ति आन्दोलन का प्रेरक साहित्य, भारत में स्त्री की स्थिति, वैदिककाल में स्त्री, भारत में स्त्री मुक्ति आन्देलन, मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में वर्णित नारी की प्रमुख समस्याऐं- नारी शोषण परिवार में, अवैध संबन्धों की समस्या, प्रेम विवाह की समस्या, कुँआरी माता की समस्या, द्विभार्या समस्या, परपुरुष संबन्ध की समस्या, विधवा विवाह की समस्या, विधवा समस्या, साली - बहनोई समस्या, विवाह विच्छेद की समस्या, अपहरण की समस्या, परिवार नियोजन की समस्या, बछिया की समस्या, सतीप्रथा, पुत्रोष्टी यज्ञ, नियोग पद्धति की समस्या, अपराधी जाति की नारियों की समस्या, नारी गिरवी रखने की समस्या, कामकाजी नारी की समस्याऐं आदि का परिचय दिया है। इसके अलावा मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों के प्रमुख नारी चरित्र, उनके उपन्यासों में चित्रित गौण नारी चरित्र आदि का चित्रण किया है। स्त्री सदियों से मानवोचित जीवन जीने से वंचित रही है। समाज में स्वतंत्रता, समानता, भाईचारा जैसे मूल्यों को पुनःस्थापित करते हुए स्त्री विमर्श, स्त्री को वस्तु से मनुष्य का दर्जा दिलाने की दिशा में पहल करता है। यह तथ्य मैत्रेयी पुष्पा के सभी उपन्यासों में जाहिर है। उनके स्त्री पात्रों के अध्ययन से यह व्यक्त है कि स्त्री की संपूर्ण स्वतंत्रता केलिए ये पात्र सक्षम है।

प्रस्तुत अध्ययन से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि समकालीन भारतीय समाज में नारी को अपनी स्वतंत्र अस्तित्व की सुषुप्त चेतना जागृत करने केलिए मैत्रेयी जी का कथा साहित्य सक्षम दिखाई पडता है।

चौथा अध्याय है- स्त्री विमर्श लेखिकाओं में मैत्रेयी पुष्पा का स्थान। इसमें हिन्दी साहित्य में महिला उपन्यासकारों की रचनाओं में चित्रित नारी समस्या और मैत्रेयी पुष्पा कृत उपन्यासों में चित्रित नारी समस्याओं के अध्ययन करके लेखिका का स्थान और रचनाओं की विशिष्टता एवं गरिमा को व्यक्त करने का प्रयास किया गया है। स्त्री विमर्श के क्षेत्र में मैत्रेयी पुष्पा और अन्य महिला लेखिकायें, समकालीन उपन्यास और मैत्रेयी पुष्पा, विभिन्न समीक्षकों एवं मैत्रेयी पुष्पा आदि विषयों पर विस्तृत चर्चा प्रस्तुत है। सदियों से चली आ रही परंपरा और रीति रिवाज़ तोडकर लेखिका ने अपने कथा साहित्य में नारी को अलग व्यक्तित्व प्रदान किया है। परंपरागत बन्धनों को अस्वीकार कर अपनी स्वतंत्रत पहचान निर्माण करनेवाली नारी को मैत्रेयी पुष्पा की रचनाओं में पायी जाती है। नारी की विकल वेदना को साकार करनेवाली मैत्रेयी की बडी खासियत यह है कि वे विचाराधारात्मक गंध एवं नारी आन्दोलन से बचकर आगे बढ़ी है। नारी की लडाई वस्तुतः उस विराट जनसमूह के ऐतिहासिक भविष्य केलिए है, जिसे भारत-माता अभिहित करते है। इसलिए मैत्रेयीजी उस सजग मानव चेतना के नैरंतर्य को देदीप्यमान करनेवाले रचनाकार हैं जिन्होंने नारी के युग-युगों की पीडा का रेशेरेशे वर्णन प्रस्तुत किया है।

पाँचवाँ अध्याय उपसंहार है जिसमें अध्ययन के अधीन चारों अध्यायों का निष्कर्ष एवं उसका समीचीन विवेचन-विश्लेषण प्रस्तुत है।

इसमें मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में चित्रित ज्वलन्त चरित्रों के माध्यम से समूची मानव जाति को यथार्थ का साक्षात्कार करने में स्त्री विमर्श की भूमिका कितनी सक्षम है यह स्पष्ट हो जाती है। अपने अस्तित्व एवं अस्मिता के प्रति सजग मैत्रेयी पुष्पा जी के स्त्री पात्र प्रतिकूल परिस्थितियों में भी पूरे हौसले के साथ अपनी मंजिल को हासिल करती है। ऐसे जुझारू पात्रों को रचनेवाली लेखिका मैत्रेयी पुष्पा जी स्त्री विमर्श की शीर्षस्थ लेखिका होने की हकदार है जिनका खुद का जीवन मानो अन्या से अनन्या बनने का अथक प्रयास था। दूसरे लेखकों से भिन्न उनकी खासियत भी यही है कि समाज द्वारा उपेक्षितों में जागरण लाने केलिए ही उन्होंने अपनी रचनायें सौंपी हैं। वे आज भी इस लक्ष्य को सामने रखकर अभंगुर साहित्य साधना करती आ रही है।

❖❖❖❖❖